श्रीसीतारामाभ्यां नमः

卐 जगद्गुरु श्रीद्वारानन्दाचार्यप्रणीता 卐

प्रश्नोत्तरावली

व्यासं बोधायनं रामं नत्वा रामेश्वरं गुरुम् ।
तत्त्वावबुद्धये कुर्वे प्रश्नोत्तरावलीं शुभाम् ॥१॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

विरचिता सुबोधिनी

सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के १३ वें आचार्य जगद्गुरु श्रीद्वारानन्दाचार्य (१९६-३७६) के धर्म-विजय यात्रा प्रसङ्ग में काञ्चीनगरी में (२९६ में) शताब्दी महोत्सव का आयोजन हुआ था उस सभा में तात्विक धर्म पिपासु साधक विद्वानों ने जो जिज्ञासा व्यक्त की उसका प्रश्नोत्तर रूप में आचार्य श्री ने ग्रथित किया वही "**प्रश्नोत्तरावली**" के नाम से समाज में प्रसिद्ध है जो संक्षेप में भारतीय दर्शन-श्रीरामानन्द दर्शन के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित करती है। संस्कृतज्ञजन तो इसके भावगंभीर सरल कथनी का आस्वादन करते ही हैं संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ साधकों की प्रेरणा से अति सरल भाषा में संक्षेप रूप से प्रश्न एवं उत्तर का स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है-

नमस्कार्या सदा का च सदाचार्यपरम्परा ।
कर्तव्यं किं सदाकर्म स्नानसन्ध्यार्चनादिकम् ॥२॥
किं ज्ञानं परमं चात्र श्रीरामभक्तिकारकम् ।
अज्ञानं परमं किञ्च रामाभजनकारकम् ॥३॥

सर्वेश्वर श्रीरामजी श्रीव्यासजी श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन एवं गुरुदेव श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी को सादर दण्डवत् प्रणाम करके वैदिक सनातन तत्त्वों के बोध कराने के लिये कल्याण दायक **प्रश्नोत्तरावली** को बनाता हूँ यानी प्रश्न एवं उत्तर के रूप में तत्त्व का उपदेश करता हूँ ॥१॥

सदा का नमस्कार्या ? सर्वदा किसको नमस्कार करना चाहिये ? **सदाचार्यपरम्परा**=सच्चे आचार्य परम्परा को सदा नमन करना चाहिये । **च=और सदा किं कर्मकर्तव्यम्** ? सर्वदा कौन कर्म को करना चाहिये ?

स्नानसन्ध्यार्चनादिकम्=स्नान सन्ध्यावन्दन श्रीरामजी की पूजा श्रीमद्रामायण की पाठ एवं श्रीरामजी का दर्शन सर्वदा करना चाहिये ॥२॥

किम् च अत्र परमं ज्ञानम् ? इस संसार में परमसर्वोत्कृष्ट ज्ञान क्या है ? **श्रीरामभक्तिकारकम्**=जो श्रीरामजी के भक्ति को उत्पन्न करने वाला हो वही सर्वोत्तम ज्ञान है । **किम् च परम् अज्ञानम्** ? और परम अज्ञान क्या है ? **राम अभजनकारकम्**=श्रीरामजी का भजन पूजन न करना ही परम अज्ञान है ॥३॥

अगतिः परमाकस्माद् विषयाणां हि सेवनात् ।
परमा च गतिः कस्माच्छ्रीमद्रामस्य सेवनात् ॥४॥
को लाभः परमश्चात्र सन्तोष एव सर्वथा ।
अलाभश्च मतः कोऽत्र लोभः क्रोधश्च देहिनः ॥५॥
अत्ययश्च कुतोमृत्योः श्रीमद्रामस्य वेदनात् ।
अन्वयश्च कुतोमृत्योः श्रीरामावेदनात् किल ॥६॥

कस्माद् परमा अगतिः ? किससे परम अगति होती है ? **हि विषयाणम् सेवनात्**=विषयों के सेवन से निश्चय रूपसे परम असद्गति होती है। **कस्मात् च परमागतिः** ? किससे निश्चित रूप से परम सद्गति प्राप्त होती है ? **श्रीमद्रामस्य सेवनात्**=षडैश्वर्यशाली श्रीरामजी की सेवा करने से निश्चित रूपसे परमगति की प्राप्ति होती है ॥४॥

च=और अत्र परमलाभः कः ? इस संसार में प्राणियों के लिये परमलाभ क्या है ? **सर्वथा सन्तोषः एव**=सर्वतोभाव से सन्तोष ही परमलाभ है ।

च=एवं देहिनः=देह धारियों के वास्ते **अत्र अलाभः कः मतः** ? इस जीवन में अलाभ क्या माना गया है ? **लोभः=अनावश्यक लोभ च=और क्रोधः**=अस्थाने अनुपयुक्त क्रोध को ही अलाभ माना गया है ॥५॥

च=एवं मृत्योः अत्ययः कुतः ? कैसे मृत्यु को जीता जा सकता है ? **श्रीमद्रामस्य वेदनात्**=श्रीसीताजी से युक्त श्रीरामजी को यथार्थ रूपमें जानकर मृत्यु को

परसौख्यप्रदः कोऽस्ति श्रीरामः सकलेश्वरः ।

परदुःखप्रदाः केऽत्र श्रीमद्रामविरोधिनः ॥७॥

कथनीया च का लोके श्रीमद्रामकथा बुधैः ।

कथनीया न का लोके स्वप्रशंसा स्ववक्त्रतः ॥८॥

जीता जाता है । **च तथैव मृत्योः अन्वयः कुतः ?** मृत्यु को कैसे प्राप्त किया जाता है ? **किल श्रीराम अवेदनात्**=यह निश्चय है कि श्रीरामजी को न जानने से मृत्यु को प्राप्त किया जाता है ॥६॥

परसौख्यप्रदः कः अस्ति ? परम सुख को देनेवाला कौन है ? **सकलेश्वरः श्रीरामः**=सभी के ईश्वर श्रीरामजी ही परमसुख को देनेवाले हैं । **अत्र परदुःखप्रदाः के ?** इस संसार में परम दुःख देनेवाले कौन हैं ? **श्रीमद्रामविरोधिनः**=षडैश्वर्यशाली श्रीरामजी के विरोधी ही परम दुःख को देनेवाले हैं ॥७॥

लोके कथनीया का ? संसार में कहने योग्य क्या है ? **बुधैः श्रीमद्रामकथा**=बुद्धिशालीजनों से कथनीय श्रीरामजी की कथा है जो धर्म अर्थ काम एवं मोक्ष देनेवाली है । **लोके कथनीया च का न ?** एवं इस लोक में कहने योग्य क्या नहीं है ? **स्ववक्त्रतः स्वप्रशंसा**=अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा कभी नहीं करनी चाहिये ॥८॥

करणीया च का लोके स्वान्तः शुद्धिर्जनैः शुभा ।
करणीया न का लोके परनिन्दा हि मानवैः ॥९॥
स्मरणीया न का लोके स्वकृत्योपकृतिः खलु ।
स्मरणीयश्च को लोके स्वमृत्यूराघवस्तथा ॥१०॥
दर्शनीयाश्च के लोके स्वीयाश्चावगुणा जनैः ।
दर्शनीया न के लोकाः कृतघ्ना नास्तिकास्तथा॥११॥

लोके करणीया का ? इस संसार में करने योग्य क्या है ? **जनैः शुभा स्वान्तः शुद्धिः**=मनुष्यों को इस लोक में कल्याण प्रद अपने अन्तःकरण की शुद्धि करनी चाहिये । **लोके करणीया च का न** ? एवं लोक में क्या नहीं करने योग्य है ? **मानवैः हि परनिन्दा**=इस लोक में मनुष्यों को दूसरों की निन्दा कभी भी नहीं करनी चाहिये ॥९॥

लोके का न स्मरणीया ? लोक में स्मरण के योग्य क्या नहीं है ? **खलु स्वकृत्य-उपकृतिः**=संसार में कभी भी परोपकार रूपसे किये गये अपने कर्म स्मरण नहीं करना चाहिये **लोके स्मरणीयः च कः** ? और लोक में स्मरण करने योग्य कौन है ? **स्वमृत्युः**=अपनी मृत्यु, तथा, **राघवः**=मृत्यु सागर से पार उतारनेवाले श्रीरामघवजी का सदा स्मरण करना चाहिये ॥१०॥

लोके दर्शनीयाः च के ? लोक में दर्शनीय पदार्थ क्या है ? **जनैः स्वीयाः अवगुणाः**=मनुष्यों को अपने

अनन्तसुखदः कोऽस्ति श्रीरामः करुणार्णवः ।
अनन्तदुःखदः कश्च पापाचारोजनैः कृतः ॥१२॥
संसृतेर्हारकः कोऽस्ति भक्तिभावश्च राघवे ।
संसृतेः कारकः कोऽस्ति भक्त्यभावश्चराघवे ॥१३॥
उत्तमा सङ्गतिः केषां श्रीवैष्णवमहात्मनाम् ।
अधमा सङ्गतिः केषामधमानां दुरात्मनाम् ॥१४॥

अवगुणों को देखना चाहिये। **लोकाः के न दर्शनीयाः?** एवं कौन से लोकों को देखना नहीं चाहिये ? **कृतघ्नाः**=उपकार के वदले में अपकार करनेवालों तथा **नास्तिकाः**=देव एवं गुरुजनों की निन्दा करनेवालों को देखना भी नहीं चाहिये।११।

कः अनन्तसुखदः अस्ति ? कौन अनन्त सुख देनेवाला है ? **करुणार्णवः श्रीरामः**=करुणा के समुद्र श्रीरामजी अनन्त सुख प्रदाता हैं। **अनन्तदुःखदः च कः ?** अनन्त दुःख देनेवाला कौन है ? **जनैः कृतः पापाचारः**=लोकों से किया गया पापों का आचरण ही अनन्त दुःख का दाता है ॥१२॥

संसृतेः हारकः कः अस्ति ? संसार के जन्म मृत्यु को हरण करनेवाला कौन है ? **राघवे भक्तिभावः**= श्रीरामघवजी में भक्तिभाव ही संसार का हरण करनेवाला है। **संसृतेः कारकः च कः अस्ति** एवं संसार का कारण कौन है ? **राघवे भक्ति अभावः**=श्रीरामजी में भक्ति का अभाव ही संसार जन्म मृत्यु का कारण है ॥१३॥

केषां सङ्गतिः उत्तमा ? किन लोकों की संगति उत्तम

के वैष्णवामहात्मानः पञ्चसंस्कारसंस्कृताः ।
संस्काराः पञ्च के चाऽत्र मालोर्ध्वपुण्ड्रकादयः ॥१५॥
महत्त्वापादिका का हि वृत्तिरयाचिका च या ।
महत्वघातिका का हि याचना चावमानदा ॥१६॥

मानी जाती है । **श्रीवैष्णवमहात्मनाम्**=महात्मा श्रीवैष्णवों की संगति उत्तम मानी जाती है। **केषाम् सङ्गतिः अधमा?** किन लोकों की संगति अधम है ? **दुरात्मनाम्, अधमानाम्**=दुष्ट मनवाले अधम व्यक्ति की संगति अधम है।१४।

वैष्णवाः महात्मानः के ? श्रीवैष्णव महात्मा लोग कौन है ? **पञ्चसंस्कारसंस्कृताः**=जो पांच संस्कारां से संस्कृत हैं वे श्रीवैष्णव महात्मा हैं। **के च पञ्चसंस्काराः ?** कौन से वे पांच संस्कार हैं ? **अत्र मालाऊर्ध्वपुण्ड्रकादयः**=इस श्रीवैष्णव तन्त्र में माला कण्ठी-ऊर्ध्वपुण्ड्र-श्रीरामरज का तिलक धनुषवाण का चिह्न श्रीराम परक नाम एवं रहस्यत्रय-तारक षडक्षर मन्त्रराज श्रीराममहामन्त्र द्वय मन्त्र एवं चरम मन्त्रों को सदाचार्यजी से यथाविधि प्राप्त करना ही पञ्चसंस्कार है ॥१५॥

महत्वापादिका का ? महत्व को प्रदान करने वाली क्या है ? **हि या अयाचिकावृत्तिः**=जो अयाचना वृत्ति है वही महत्व की प्रतिपादिका है। **महत्वघातिका च का ?** महत्व का नाश करनेवाली क्या है ? **अवमानदा याचना हि** अवमानना प्रदान करनेवाली याचना ही महत्व की घातिका है ॥१६॥

जीवन्तोऽपिमृताः के हि यशः शून्या जना भुवि ।
के मृताश्चेह जीवन्ति कीर्तिमन्तो जनाश्चये ॥१७॥
मानार्हाः के जना लोके सर्वत्रसमदर्शिनः ।
मानानर्हा नराः केऽत्र दृष्टिवैषम्यशालिनः ॥१८॥
भक्तिक्षये हि को हेतुर्विषयाणां विचिन्तनम् ।
भक्तिवृद्धौ च हेतुः कोविषयाणामचिन्तनम् ॥१९॥

जीवन्तः अपि मृताः के ? जिन्दे होते हुये भी मरे हुये कौन हैं ? **भुवि हि यशः शून्याः जनाः**=यश से रहित मनुष्य ही संसार में जीते हुये भी मृत के समान हैं। **इहमृताः च के जीवन्ति ?** इस संसार में मरे हुये भी कौन जीवित हैं ? **ये च कीर्तिमन्तः जनाः**=जो कीर्तिशाली जन हैं वे ही मरने पर भी जीवित हैं ॥१७॥

लोके मानर्हाः जनाः के ? लोक में सम्मान के योग्यजन कौन हैं ? **सर्वत्रसमदर्शिनः**=सभी में समान देखनेवाले सम्मान के पात्र हैं। **अत्र मान-अनर्हाः नराः के ?** इस संसार में मान न करनेवाले नर कौन हैं ? **दृष्टिवैषम्यशालिनः**=जिन की दृष्टि विषय-पक्षपात पूर्ण है वे मान करने योग्य नहीं हैं १८

भक्तिक्षये हेतुः कः ? भक्ति के क्षीण होने में कारण क्या है ? **विषयाणां विचिन्तनम् हि**=विषयों का वार वार चिन्तन ही भक्ति के क्षय में कारण है। **भक्तिवृद्धौ च हेतुः कः ?** एवं भक्ति के वृद्धि में कारण क्या है ? **विषयाणाम् अचिन्तनम्**=विषयों का चिन्तन न करना ही भक्ति के वृद्धि में कारण है ॥१९॥

रक्षति पुरुषं कोऽत्र स्वस्य धर्मोहि रक्षितः ।
धर्मश्च वैदिकः कोऽत्र श्रीमद्वैष्णवसंज्ञकः ॥२०॥
प्रायश्चित्तविहीना का विरक्तस्य गृहस्थता ।
कोमठाध्यक्षताऽनर्होऽधर्मे सम्पद्विनाशकः ॥२१॥
मन्दिराध्यक्षताऽनर्हः कः पुमान् यस्त्वधार्मिकः ।
कश्चार्चकपदानर्हो दुराचारीतथाऽशुचिः ॥२२॥

अत्र पुरुषम् कः रक्षतिः ? इस संसार में पुरुष को मानव को कौन रक्षा करता है ? **स्वस्य धर्मः हि रक्षति**=मानव से रक्षित पालित अपना धर्म ही मानव की रक्षा करता है। **अत्र वैदिक धर्मः च कः** ? इस लोक में वैदिक धर्म कौन सा है ? **श्रीमद्वैष्णवसंज्ञकः**=श्रीवैष्णव नामवाला धर्म ही वैदिक धर्म है ॥२०॥

प्रायश्चित्तविहीना का ? प्रायश्चित्त से रहित पाप कौन है ? **विरक्तस्य गृहस्थता**=विरक्त दीक्षा लेकर गृहस्थ हो जाना ही प्रायश्चित्त विहीन पाप है। **मठाध्यक्षता अनर्हः कः** ? मठ-आचार्यपीठ का अध्यक्ष होने लायक कौन नहीं है ? **अधर्मे सम्पद् विनाशकः**=अधर्म में सम्पत्ति को नाश करनेवाला पीठ का आचार्य होने लायक नहीं है ॥२१॥

कः पुमान् मन्दिर-अध्यक्षता अनर्हः ? कौन मनुष्य मन्दिर का अध्यक्ष-महन्त-आचार्य के योग्य नहीं है ? **यः तु अधार्मिकः**=जो मनुष्य अधार्मिक है वह मन्दिर का आचार्य होने लायक नहीं है। **कः च अर्चकपद-अनर्हः**

स्वभावेन पशुःकश्च दुर्गुणीमानवोहि यः ।
स्वभावेन सुरः कश्च सद्‌गुणीयश्चमानवः ॥२३॥
ज्ञानञ्चवर्धते कस्मादहङ्कारविमोचनात् ।
ज्ञानं हि क्षीयते कस्मादहंभावस्य पोषणात् ॥२४॥
भयप्रदं च किं कर्म कुदृष्ट्या स्त्रीविलोकनम् ।
भयाप्रदा हि का चान्यस्त्रीषु मातृत्वभावना ॥२५॥

एवं कौन पूजारी के लायक नहीं है ? **दुराचारी तथा अशुचिः**=दुराचारी तथा अपवित्र व्यक्ति पूजारी के लायक नहीं है ॥२२॥

स्वभावेन पशुः कः ? स्वभावतः पशु असुर कौन है? **यः च दुर्गुणीमानवः**=जो दुर्गुणी मनुष्य है वह स्वभाव से ही पशु राक्षस है । **स्वभावेन सुरः कः** ? स्वभाव से देवता कौन है ? **यः च सद्‌गुणी मानवः**=जो सद्‌गुणीमानव है वह स्वभाव से ही देवता है ॥२३॥

कस्मात् च ज्ञानम् वंर्धते ? किस उपाय से ज्ञान वढ़ता है ? **अहङ्कारविमोचनात्**=अहंकार के त्याग से ज्ञान बढता है । **कस्मात् हि ज्ञानम् क्षीयते** ? किस कार्य के करने से ज्ञान क्षीण होता है ? **अहम्भावस्य पोषणात्**=अहंयाव के पोषण करने से ज्ञान नाश हो जाता है ॥२४॥

किं च कर्म भयप्रदम् ? कौन सा कर्म भय जनक है? **कुदृष्ट्या स्त्रीविलोकनम्**=खराव दृष्टि से स्त्री को देखना भय

मोहश्च नश्यति कस्माद्वस्तुनि दोषदृष्टितः ।
वर्धते हि कथं मोहोगुणदृष्ट्या च वस्तुनि ॥२६॥
तपश्च क्षीयते कस्मात् क्रोधादिदुर्गुणात् किल ।
वर्धते हि तपः कस्मादक्रोधादविवर्धनात् ॥२७॥
कल्याणं प्राप्यते कस्मात् सर्वकल्याणवाञ्छया ।
कल्याणं नश्यति कस्मादन्याकल्यांणवाञ्छया ॥२८॥

प्रद है। **का च भय अप्रदा ?** कौन कर्म अभय देनेवाला है ? **हि अन्य स्त्रीषु मातृत्व भावना**=नियत रूपसे पराई स्त्रियों में मातृ भावना अभयदायक है ॥२५॥

कस्मात् च मोहः नश्यति ? किस आचरण से मोह नाश होता है ? **वस्तुनि दोषदृष्टितः**=वस्तु-पदार्थों में दोष दृष्टि से मोह नाश हो जाता है। **मोहः कथम् वर्धते ?** मोह कैसे बढता है। **हि वस्तुनि गुणदृष्टया**=नियत रूपसे वस्तुओं में गुण दृष्टि होने से च-और भोग दृष्टि होने से मोह वढता है ॥२६॥

कस्मात् च तपः श्रीयते ? किस आचरण से तप क्षीण होता है ? किल क्रोध-**आदि दुर्गुणात्**=निश्चय ही अनावश्यक क्रोध एवं मोह तथा मात्सर्य आदि दुर्गुणों से तप नाश हो जाता है। **कस्मात् हि तपः वर्धते ?** किस आचरण से नियत रूपसे तप बढता है ? **अक्रोधादि विवर्धनात्**=अक्रोध आदि के संवर्धन से तप बढता है ॥२७॥

कस्मात् कल्याणं प्राप्यते ? किस आचरण से कल्याण प्राप्त होता है ? **सर्वकल्याणवाञ्छया**=सभी के कल्याण

मनोवशे कथं भूयाद्वैराग्याभ्यासतः खलु ।
कथं मनोवशे न स्याद् वैराग्यादेरभावतः ॥२९॥
सत्कार्यसाधिका काऽत्र स्वगुणगर्वशून्यता ।
सत्कार्यवाधिका का च स्वगुणानामहङ्कृतिः ॥३०॥
किं कर्म बन्धकं पुंसां श्रीरामायासमर्पितम् ।
बन्धकं नाथ किं कर्म श्रीरामायसमर्पितम् ॥३१॥

की कामना से कल्याण प्राप्त किया जाता है । **कस्मात् कल्याणम् नश्यति ?** किस आचरण से कल्याण नाश हो जाता है ? **अन्य-अकल्याणवाञ्छया**=अन्यों की अमंगल कामना से अपना कल्याण नाश हो जाता है ॥२८॥

कथं मनः वशे भूयात् ? कैसे मन वश में होता है ? **खलु वैराग्य-अभ्यासतः**=नियत रूप से मन तभी वश में होता है जव वैराग्य पूर्वक अभ्यास किया जाय । **मनः कथं वशे न स्यात् ?** मन कैसे वश में नहीं होता है ? **वैराग्यादेः अभावतः**=वैराग्य एवं अभ्यास के अभाव में मन वश में नहीं होता है ॥२९॥

अत्र सत्कार्यसाधिका का ? इस संसार में सत्कार्य का साधक क्या है ? **स्वगुणगर्वशून्यता**=अपने गुणों के विषय में गर्व रहित होना ही सत्कर्म का साधक है । **सत्कर्मवाधिका च का ?** सत्कर्म के वाधक क्या हैं ? **स्वगुणानाम् अहङ्कृतिः**=अपने गुणों पर अहंकार होना ही सत्कर्म का बाधक है ॥३०॥

पुसां बन्धकं कर्मकिम् ? मनुष्यों को बन्धन कर्ता कर्म

सर्वमैत्रीकरं किञ्च पुसां मधुरभाषणम् ।
सर्वमैत्रीहरं वा किं दारुणं भाषणं किल ॥३२॥
अधः पतनहेतुः कश्चाञ्चल्यं पुरुषस्य हि ।
उन्नतेः कारणं किञ्च चाञ्चल्यशून्यता खलु ॥३३॥

कौन हैं ? **श्रीरामाय-असमर्पितम्**=श्रीरामजी को असमर्पित कर्म मनुष्यों को बन्धन कारक होता है । **अथ किं कर्म बन्धकं न** ? तो कौन सा कर्म बन्धन कारक नहीं होता है ? **श्रीरामाय समर्पितम्**=श्रीरामजी को समर्पित कर्म बन्धन कारक नहीं होता है ॥३१॥

पुंसा किञ्च सर्वमैत्रीकरम् ? मनुष्यों को कौन सा पदार्थ सभी से मैत्री कारक है ? **मधुरभाषणम्**=मधुर वोली ही मनुष्यों को सभी से मैत्री कारक है । **किं वा सर्व मैत्रीहरम्** ? कौन सा सभी मैत्री को हरण-नाश करनेवाला है ? **दारुणं भाषणं किल**=निश्चय ही दारुण-खराव वोली सभी मैत्री को नाश करनेवाली होती है ॥३२॥

कः च अधः पतनहेतुः ? कौन सा अधः पतन का कारण है ? **पुरुस्य चाञ्चल्यं हि**=पुरुष की चंचलता-अजीतेन्द्रियपना ही अधः पतन का कारण है । **किम् च उन्नतेः कारणम्** ? एवं उन्नति का कारण क्या है ? **चाञ्चल्यशून्यता खलु**=चंचलता से रहित होना ही उन्नति का कारण है ॥३३॥

शत्त्वशुद्धौ च कोहेतुरदुष्टान्नस्य भक्षणम् ।
शत्त्वाशुद्धौ हि कोहेतुर्दुष्टान्नस्य सुसेवनम् ॥३४॥
शुध्यतिहृदयं कस्माच्छ्रीमद्रामस्य कीर्तनात् ।
कुतश्चाचारशुद्धिः स्यात् संयमादेव नान्यथा ॥३५॥
सन्मार्गदर्शकाः केऽत्र ज्ञानिनः साधवश्च ये ।
सन्मार्गलोपकाः केचाज्ञानिनोऽसाधवश्च ये ॥३६॥

शत्त्वसुद्धौ हेतुः कः ? शत्त्व शुद्धि में कारण क्या है? **अदुष्ट-अन्नस्य भक्षणम्**=सात्विक अनाज का आहार शत्त्व शुद्धि में कारण है। **शत्त्व अशुद्धौ च हेतुः कः ?** शत्त्व के अपवित्रता में कारण क्या है ? **दुष्ट अन्नस्य सुसेवनम्**=दुष्ट-खराव अनाज का संसेवन ही शत्त्व के अशुद्धि में कारण है ॥३४॥

कस्मात् हृदयं शुध्यति ? किस से हृदय शुद्ध होता है ? **श्रीमद्रामस्य कीर्तनात्**=षडैश्वर्यशाली श्रीरामजी के कीर्तन से हृदय शुद्ध होता है। **आचारशुद्धिः च कुतः स्यात् ?** आचार की शुद्धि कैसे होगी ? **संयमाद् एव अन्यथा न**=संयम से ही आचार की शुद्धि होगी अन्य कोई उपाय से नहीं ॥३५॥

अत्र सन्मार्गदर्शकाः के ? इस संसार में सन्मार्ग वतानेवाले कौन हैं ? **ये ज्ञानिनः साधवः च**=जो ज्ञानी एवं साधु हैं वे ही सत्य मार्ग के प्रदर्शक हैं। **के च सन्मार्गलोपकाः ?** कौन लोग सन्मार्ग के नाशक हैं ? **ये**

दुःखनाशे च को हेतुः प्रीतिः श्रीराघवस्य हि ।
रामप्रीतौ च कोहेतूरामभक्तिरहेतुकी ॥३७॥
बुद्धिशुद्धौ च हेतुः कः सद्ग्रन्थपरिशीलनम् ।
धर्मश्च वर्धते कस्मात् सत्येनाहिंसया तथा ॥३८॥
वैदिकः सम्प्रदायः कः कश्च तस्य प्रवर्त्तकः ।
श्रौतः श्रीसम्प्रदायः स रामसीता प्रवर्त्तितः ॥३९॥

अज्ञानिनः असाधवः च=जो अज्ञानी एवं असाधु हैं वे ही सत्य मार्ग के नाशक हैं ॥३६॥

दुःखनाशे च हेतुः कः ? दुःखों के नाश में कारण क्या है ? **श्रीराघवस्य प्रीतिः हि**=श्रीराघवजी के चरणों में प्रीति ही दुःखों के नाश में कारण है । **राम प्रीतौ च हेतुः कः ?** श्रीरामजी के प्रीति में कारण क्या है ? **अहेतुकी रामभक्तिः**=अहेतुक श्रीरामभक्ति ही श्रीराम प्रीति में कारण है ॥३७॥

बुद्धिशुद्धौ च कः हेतुः ? बुद्धि की शुद्धि में कारण क्या है ? **सद्ग्रन्थपरिशीलनम्**=सद्ग्रन्थों का अभ्यास बुद्धि के शुद्धि में कारण है । **कस्मात् च धर्मवर्धते ?** किस आचरण से धर्म बढता है ? **सत्येन तथा अहिंसया च**=सत्य के आचरण तथा अहिंसा से धर्म बढ़ता है ॥३८॥

वैदिकः सम्प्रदायः कः ? वैदिक सम्प्रदाय कौन है ? **तस्य प्रवर्त्तकः च कः ?** एवं उसका प्रवर्त्तक कौन है ? **सः श्रौतः श्रीसम्प्रदायः**=यही वैदिक श्रीसम्प्रदाय है, **यः**

वैद्रिकः कश्चसिद्धान्तोविशिष्टाद्वैतसंज्ञकः ।
मुक्तिकृत्कस्य ज्ञानं हि ब्रह्मणः सकलात्मनः ॥४०॥
ब्रह्माख्यः सकलात्मा कः श्रीरामश्चिदचित्तनुः ।
श्रीरामस्य च किं धाम श्रीसाकेतः परात्परः ॥४१॥
तद्धाम प्राप्यते कस्माद् रामभक्त्यार्चिरादिना ।
का भक्तीरामचन्द्रस्य स्मरणं प्रेमपूर्वकम् ॥४२॥

रामसीता प्रवर्त्तितः=जो श्रीसीतारामजी से प्रवर्त्ति है।३९।

कः वैदिकः सिद्धान्तः ? कौन वैदिक सिद्धान्त है ? **विशिष्टाद्वैतसंज्ञकः**=विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त ही वैदिक सिद्धान्त है। **कस्य च ज्ञानम् मुक्तिकृत् ?** एवं किसका ज्ञान मुक्ति प्रदायक है ? **सकलात्मनः ब्रह्मणः हि**=चराचर सभी जीवों के आत्मा परब्रह्म श्रीरामजी के ज्ञान से ही मुक्ति होती है ॥४०॥

ब्रह्माख्यः सकल-आत्मा कः ? ब्रह्म नाम से प्रसिद्ध सभी की आत्मा कौन है ? **चित्-अचित् तनुः श्रीरामः**=चित्-चेतन जीव वर्ग अचित्-अचेतन प्रकृति शरीर वाले श्रीरामजी ब्रह्म नाम वाले हैं वे ही सभी के आत्मा हैं। **किम् च श्रीरामस्य धाम ?** कौन सा श्रीरामजी का धाम है ? **परात्परः श्रीसाकेतः**=परात्पर श्रीसाकेत धाम ही श्रीरामजी का धाम है ॥४१॥

कस्मात् तत् धाम प्राप्यते ? किस उपाय से वह धाम प्राप्त किया जाता है ? **रामभक्त्या अर्चिरा-दिना**=

भक्तेर्हि कारणं किञ्च विवेकादिकसप्तकम् ।
मुक्तिहेतुः प्रपत्तिः का रामायात्मनिवेदनम् ॥४३॥
कश्चिदर्थोऽत्र जीवात्मा ज्ञानात्मकोऽणुचेतनः ।
कोऽचिदर्थोऽत्र चैतन्य हीनोऽव्यक्तादिसंज्ञकः ॥४४॥

श्रीरामजी की भक्ति से अर्चिरादि मार्ग द्वारा वह श्रीसाकेत धाम प्राप्त होता है। **रामचन्द्रस्य भक्तिः का ?** श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति क्या है ? **प्रेमपूर्वकम् स्मरणम्**=प्रेमपूर्वक अनन्यभाव से श्रीरामजी का स्मरण श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति है ॥४२॥

भक्तेः हि कारणं किम् ? भक्ति का निश्चित कारण क्या है ? **विवेकादिकसप्तकम्**=विवेक, विमोक, अभ्यास, क्रिया कल्याण, अनवसाद एवं अनुद्धर्ष ये सात भक्ति उत्पन्न करने में कारण हैं-इन कारणों के विशेष ज्ञान के लिये आनन्दभाष्य की मेरी टीका देखें। **मुक्तिहेतुः प्रपत्तिः च का ?** एवं मुक्ति का कारण प्रपत्ति क्या है ? **रामाय-आत्मनिवेदनम्**=श्रीरामजी को सर्वतोभाव से आत्मा का निवेदन ही मुक्ति का कारण प्रपत्ति है ॥४३॥

अत्र चित् अर्थः कः ? इस श्रौतविशिष्टाद्वैत वेदान्त सिद्धान्त में चित् पदार्थ कौन है ? **ज्ञानात्मकः अणुचेतनः जीवात्मा**=ज्ञानस्वरूप अणु एवं चेतन जीवात्मा ही चित् पदसे कथित् है। **अत्र अचिदर्थः कः?** श्रौतविशिष्टाद्वैत मतानुसार अचित् अर्थक कौन है ? **चैतन्यहीनः अव्यक्तादि-संज्ञकः**=चेतनता से रहित अव्यक्त-प्रकृति महत् आदि नाववाला अचित् पदार्थ कहा जाता है ॥४४॥

भेदोऽभेदोऽथ किं जीवब्रह्मणोर्भेद एव हि ।

कुतस्तयोरभेदो न जीवस्याविभुता यतः ॥४५॥

कुतश्चात्मविभुत्वं न ह्युत्क्रान्त्यादिविरोधतः ।

देहमानः कुतोनाऽत्मा तथात्वेऽनित्यताभवेत् ॥४६॥

जीवब्रह्मणोः किम् भेदः अथ अभेदः ? जीवात्मा एवं ब्रह्म में क्या भेद है अथवा अभेद है ? **जीवब्रह्मणोः हि भेदः एव**=जीव एवं ब्रह्म में स्वभाविक भेद ही है अभेद नहीं । **तयोः कुतः अभेदः न ?** जीव एवं ब्रह्म में कैसे अभेद नहीं है ? **यतः जीवस्य-अविभुता**=क्योंकि जीवात्मा में व्यापकता नहीं है यानी ब्रह्म व्यापक है जीव अव्यापक है अतः दोनों विरुद्ध धर्म वाले होने से अभेद-एक न होकर भेद-भिन्न हैं ॥४५॥

कुतः च आत्मविभुत्वं न ? किस लिये जीवात्मा विभु नहीं है ? **हि उत्क्रान्ति आदिविरोधतः**=वह इस लिये जीवात्मा को विभु नहीं माना जाता कि जीव का यहाँ से परलोक जाना एवं वहां से यहाँ आना आदि शास्त्र वचन से विरोध होता है । **आत्मा देहमानः कुतः न ?** जीवात्मा शरीर प्रमाण वाला क्यों नहीं है ? **तथात्वे अनित्यताभवेत्**=जीव को शरीर प्रमाण वाला मानने से उसमें संकोच विकास होने से अनित्यता आजायगी अतः जीवात्मा शरीर प्रमाण वाला नहीं है ॥४६॥

देहरूपः कुतो नात्मा "मम देहः" प्रतीतितः ।
इन्द्रियाणि कुतो नात्मा "ममेन्द्रियं" प्रतीतितः ॥४७॥
प्राणरूपः कुतो नात्मा 'मम प्राणः' प्रतीतितः ।
बुद्धिरूपः कुतो नात्मा 'मम बुद्धिः' प्रतीतितः ॥४८॥
किं ज्ञानमजडं चाचिद्विभुजीवेशयोर्गुणः ।
शुद्धसत्त्वं च किं नित्यं शुद्धसत्त्वाश्रयोऽजडम् ॥४९॥

आत्मा देहरूपः कुतः न ? जीवात्मा देह रूप क्यों नहीं है ? **"मम देहः" प्रतीतितः**='मेरा देह है' ऐसा अलग रूप से ज्ञान होता है इसलिये आत्मा देह रूप नहीं है । **इन्द्रियाणि आत्मा कुतः न ?** इन्द्रियां आत्मा क्यों नहीं है ? **'मम इन्द्रियम्' प्रतीतितः**=मेरी इन्द्रियाँ हैं' ऐसा ज्ञान होता है अतः इन्द्रियाँ आत्मा नहीं है ॥४७॥

आत्मा प्राणरूपः कुतः न ? आत्मा प्राण रूप क्यों नहीं है ? **'मम प्राणः' प्रतीतितः**='मेरा प्राण है' ऐसा भिन्न रूपसे अनुभव होता है अतः प्राण आत्मा नहीं है । **आत्मा बुद्धिरूपः कुतः न ?** आत्मा बुद्धि रूप क्यों नहीं है ? **'मम बुद्धिः' प्रतीतितः**='मेरी बुद्धि' इस प्रकार आत्मा से अलग रूप से प्रतीति होती है अतः बुद्धि आत्मा नहीं है ॥४८॥

ज्ञानम् च किम् ? एवं ज्ञान क्या है ? **अजडम् अचित् विभु जीवेशयोः गुणः**=जो अजड़ अचित् एवं व्यापक है और जीवात्मा तथा परमात्मा का गुण है वह

का प्रकृतिर्जडा चाचित् सत्वादित्रिगुणाश्रया ।

कः कालश्च विभुद्रव्यं सत्त्वादि रहितोजडः ॥५०॥

ध्येयौ श्रीवैष्णवानां कौ सीतारामौ परापरौ ।

अर्चनीयौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ॥५१॥

ज्ञान है। **किं च शुद्धसत्त्वम् ?** तथा शुद्धसत्त्व क्या है ? **नित्यं शुद्धसत्त्वाश्रयः अजडम्**=जो नित्य हो शुद्धसत्त्व का आश्रय हो एवं अजड-स्वयं प्रकाशमान हो वह शुद्धसत्त्व है ॥४९॥

प्रकृतिः का ? प्रकृति क्या है ? **जडा अचित् च सत्वादित्रिगुणाश्रया**=जो जड-ज्ञान रहित हो और अचित् चेतन शून्य हो ,एवं सत्त्व रज तथा तम तीनों गुणों का आश्रय हो वह प्रकृति है। **कालः च कः ?** एवं काल किसे कहते हैं ? **विभुद्रव्यं सत्वादिरहितः जडः**=जो व्यापक द्रव्य हो सत्त्व रज एवं तमो गुण से रहित हो और जड़ हो उसे काल कहते हैं ॥५०॥

श्रीवैष्णवाणां ध्येयौ कौ ? श्रीवैष्णवों के ध्यान करने योग्य कौन हैं ? **परात्परौ सीतारामौ**=परात्पर ब्रह्म श्रीसीतारामजी ही श्रीवैष्णवों के ध्यान करने योग्य हैं। **कौ च जनैः अर्चनीयौ ?** एवं कौन मनुष्यों से पूजनीय हैं ? **परात्परौ सीतारामौ**=परात्पर सर्वेश्वर श्रीसीतारामजी ही साधक मनुष्यों से पूजनीय हैं ॥५१॥

वन्दनीयौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ।
कीर्तनीयौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ॥५२॥
दर्शनार्हौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ।
श्रवणार्हौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ॥५३॥
मननार्हौ जनैः कौ च सीतारामौ परात्परौ ।
निदिध्यासनयोग्यौ कौ सीतारामौ परात्परौ ॥५४॥

जनैः वन्दनीयौ च कौ ? मुमुक्षु जनों से वन्दनीय प्रणाम करने योग्य कौन हैं ? **परात्परौ सीतारामौ**=सभी देवों से वन्दित परात्पर देव श्रीसीतारामजी ही साधक जनों से वन्दनीय हैं । **कौ च जनैः कीर्तनीयौ ?** एवं कौन साधक जनों से कीर्तन करने योग्य हैं ? **सीतारामौ परात्परौ**=सर्व पूज्य परात्पर श्रीसीतारामजी ही सभी साधक जनों से कीर्तनीय हैं ॥५२॥

कौ च जनैः दर्शन-अर्हौ ? कौन देवता जनों से दर्शन करने योग्य हैं ? **परात्परौ सीतारामौ**=परात्पर सर्वों से वन्दनीय श्रीसीतारामजी ही जनों तथा देवताओं से सदा दर्शन करने योग्य हैं । **जनैः श्रवण-अर्हौ च कौ ?** साधकजनों से श्रवण करने योग्य चरित्र वाले कौन हैं ? **परात्परौ सीतारामौ**=उदात्त चरित वाले परात्पर ब्रह्म श्रीसीतारामजी का चरित ही सदा सुनने योग्य है ॥५३॥

कौ च जनैः मनन अर्हौ ? कौन देव साधक जनों से मनन करने योग्य हैं ? **सीतारामौ परात्परौ**=सर्व

कस्मिन् श्रुते श्रुतं सर्वं भवेद् ब्रह्मणि राघवे ।
कस्मिन् मते मतं सर्वं भवेद् ब्रह्मणि राघवे ॥५५॥
कस्मिन् ज्ञानेऽखितं ज्ञातं भवेत् ब्रह्मणि राघवे ।
कस्येक्षणाज्जगत्सर्वं जायते राघवस्य हि ॥५६॥

अन्तर्यामी परात्पर ब्रह्म श्रीसीतारामजी ही साधक जनों से सदा मनन करने योग्य हैं । **निदिध्यासनयोग्यौ च कौ ? एवं निदिध्यासन**-समन्वय पूर्वक ठीक से विचारने योग्य कौन हैं ? **सीतारामौ परात्परौ**=सर्वशास्त्र सारतत्त्व श्रीसीतारामजी ही एकान्तचित्त से पुनः पुनः विचारने के योग्य हैं ॥५४॥

कस्मिन् श्रुते सर्वम् श्रुतम् भवेत् ? किस के चरित को सुन लेने पर सव सुन लिया जाता है ? **ब्रह्मणि राघवे**=ब्रह्म श्रीराघवजी के गुण धर्मों के सुन लेने पर सव श्रुत हो जाता है । **कस्मिन् मते सर्वम् मतम् भवेत् ?** किसके मत श्रुति प्रतिपादित तत्त्व के जान लेने पर सव जान लिया जाता है ? **ब्रह्मणि राघवे**=सर्व श्रुति प्रतिपादित ब्रह्म तत्त्व श्रीराघवजी के जान लेने पर सव तत्त्व जान लिया जाता है ॥५५॥

कस्मिन् ज्ञाते अखिलम् ज्ञातम् भवेत् ? किसके ज्ञात-अवगत-सर्वदा उत्कृष्ट भावना स्वरूप ध्यान करने से सम्पूर्ण तत्त्व ज्ञात हो जाता है ? **ब्रह्मणि राघवे**=परब्रह्म श्रीराघवजी के विज्ञान से ही सव तत्त्व विज्ञात होता है ।

जगत्सर्वं तनुः कस्य रामस्य ब्रह्मणः सतः ।

नास्ति केन समं तत्त्वं रामेण ब्रह्मणा समम् ॥५७॥

तत्त्वं न ह्यधिकं कस्मात् सीतानाथात् परात्मनः ।

सर्वेषामवतारी को रामो ब्रह्मगुणार्णवः ॥५८॥

कस्य-ईक्षणात् सर्वम् जगत् जायते ? किसकी इच्छा-अवलोकन मात्र से यह सम्पूर्ण चराचर संसार उत्पन्न होता है ? **हि राघवस्य**=सभी जीवों के आधारभूत सर्वेश्वर श्रीराघवजी के संकल्प मात्र से ही स्थावर जंगमात्मक सर्व विश्व उत्पन्न होता है ॥५६॥

सर्वम् जगत् कस्य तनुः ? यह सव जगत् किसका शरीर है ? **सतः ब्रह्मणः रामस्य**=यह परिदृश्यमान सव जगत् सर्वदा अविकृत रूप से स्थित रहने वाले पर ब्रह्म श्रीरामजी का शरीर है। **केन समम् तत्त्वम् नास्ति ?** किसके समान तत्त्व नहीं है ? **ब्रह्मणा रामेण समम्**=परब्रह्म श्रीरामजी के समान दूसरा तत्त्व नहीं है ॥५७॥

कस्मात् अधिकम् तत्त्वम् न ? किसके अधिक तत्त्व नहीं है ? **हि परात्मनः सीतानाथात्**=परमात्मा श्रीसीता नाथजी से अधिक तत्त्व कुछ भी नहीं है यह वेदादि शास्त्रों से निश्चित है। **सर्वेषाम् अवतारी कः ?** सभी अवतारों के अवतारी कौन हैं ? **गुणार्णवः**

सकृदेव प्रपत्त्याकोऽभयं दत्ते हि राघवः ।

श्रिताघं वीक्षते को न रामोदिव्यशरीरकः ॥५९॥

वक्तव्यं सज्जनैः किं च सत्यं च मधुरं हितम् ।

वक्तव्यं न हि किं वाच्यं मिथ्याप्राण्यहितावहम् ॥६०॥

ब्रह्मरामः=गुणों के महासमुद्र ब्रह्म श्रीरामजी ही सभी अवतारों के अवतारी हैं ॥५८॥

सकृत् एव प्रपत्त्या कः अभयम् दत्ते ? एकवार के ही प्रपत्ति से जीवों को कौन अभय देता है ? **हि राघवः**=शरणागत जीवों को अभय देनेवाले श्रीराघवजी ही हैं अन्य नहीं । **कः श्रिताघं न वीक्षते ?** कौन आश्रित जीवों का अपराध नहीं देखते हैं ? **दिव्यशरीरकः रामः**=दिव्य शरीर वाले श्रीरामजी अपने आश्रितों के अपराधों को नहीं देखते हैं ॥५९॥

सज्जनैः किम् वक्तव्यम् ? सज्जनों को क्या एवं कैसे वोलना चाहिये ? **सत्यम् मधुरम् हितम् च**=परहित चिन्तक सज्जनों को सत्य मधुर एवं हितकर वोली वोलना चाहिये । **किम् च वाक्यं न हि वक्तव्यम् ?** एवं कौन सी वाणी नहीं वोलना चाहिये ? **प्राणि-अहितावहम् मिथ्या**=प्राणि वर्ग को अहित करनेवाली मिथ्या अप्रमाणिक तथ्यशून्य झूठी वोली सज्जनों को नहीं वोलनी चाहिये ॥६०॥

महापुण्यं कुतोलोके परेषामुपकारतः ।
महापापं कुतश्चाथ परेषां हिंसनात् किल ॥६१॥
आचार्यचक्रवर्ति श्रीद्वारानन्दार्यनिर्मिता ।
प्रश्नोत्तरावली चैषा भूयात् सद्बोधदायिनी ॥६२॥

लोके महापुण्यम् कुतः ? संसार में महापुण्य किससे होता है ? **परेषाम् उपकारतः**=निस्वार्थभाव से दूसरों का उपकार करने से महान् पुण्य होता है । **अथ महापापं च कुतः ?** एवं महापाप किससे होता है? **परेषाम् हिंसनात् किल**=दूसरों की हिंसा करने से निश्चय ही महापाप होता है ॥६१॥

आचार्य चक्रवर्ती जगद्गुरु श्रीद्वारानन्दाचार्य निर्मित यह प्रश्नोत्तरावली पाठकों को तत्त्वों के बोध कराने वाली हो ॥६२॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

विरचिता सुबोधिनी

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐

जगदाचार्य जयन्ती ६९१ माघ कृष्ण-७

卐